



# उ०प्र० कृषि अनुसंधान परिषद

## U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ-226005

Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक: 513/एनआरएम/डब्ल्यूएसएलएएजी/पीएल/2021

दिनांक: 26-06-2025

**मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की दिनांक 26 जून, 2025 को वर्ष 2025-26 की सम्पन्न आठवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियों**

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025-26 की आठवीं बैठक, डा. राजर्षि कुमार गौर, प्रभारी महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 26 जून, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक तथा पादप रोग वैज्ञानिक, पादप प्रजनन वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी; शुआद्स, प्रयागराज के तकनीकी अधिकारी; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक तथा मौसम वैज्ञानिक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के वैज्ञानिक; बी.एच.यू. वाराणसी के वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के वैज्ञानिक; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के वैज्ञानिक; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ; सी.ए.एफ.आर.आई., झांसी के वैज्ञानिकों; उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, लखनऊ; गन्ना विभाग; पशुपालन विभाग; उद्यान विभाग तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया (उपस्थिति संलग्न)।

### आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (26 जून -03 जुलाई, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के आरम्भिक चरण में 27 जून तक प्रदेश में कहीं-कहीं छिटपुट वर्षा के बाद 28 जून की देर शाम से प्रदेश के दक्षिणी भाग से वर्षा में बढ़ोत्तरी आरंभ होकर धीरे-धीरे पश्चिम की ओर बढ़ने से 29 जून से 02 जुलाई के दौरान प्रदेश के अधिकांश भाग में मेघगर्जन/वज्रपात के साथ हल्की से मध्यम वर्षा एवं कहीं-कहीं भारी वर्षा होने तथा प्रदेश के दक्षिणी एवं तराई इलाकों में कहीं-कहीं बहुत भारी वर्षा होने से दक्षिणी एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सामान्य से अधिक वर्षा जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य के आस-पास होने की संभावना है।

प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से 2 से 4 डिग्री से. कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस-पास या सामान्य से आंशिक रूप से 1 से 2 डिग्री से. कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, बुंदेलखंड क्षेत्र के दक्षिणी भाग एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 31 से 34 डिग्री से., दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 34 से 36 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री से. दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग तथा मध्य मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 26 से 28 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 24 से 26 डिग्री से. रहने की संभावना है।

कृषि विभाग से दिनांक 21 जून, 2025 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 106.05 लाख हे. के सापेक्ष 5.59 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का

मात्र 5.27 प्रतिशत है। अब तक धान की नर्सरी लक्ष्य 4.33 लाख हे. के सापेक्ष 4.20 लाख हे. में डाली जा चुकी है जो लक्ष्य का 96.90 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 65.00 लाख हे. के सापेक्ष 2.72 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 4.20 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.83 लाख हे. के सापेक्ष 1.09 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 3.01 लाख हे. के सापेक्ष 0.77 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 11.284 लाख हे. के सापेक्ष 0.16 लाख हे. की बुवाई, तिल फसल लक्ष्य 4.38 लाख हे. के सापेक्ष 0.19 लाख हे. एवं अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 0.22 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है।

बैठक में विचार-विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन व कृषि के अन्य क्षेत्रों हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गये:-

- धान की तैयार पौध की रोपाई पर्याप्त नमी की अवस्था में युद्धस्तर पर करें। किसान भाई धान की कम अवधि की प्रजातियों की सीधी बुवाई ड्रम सीडर (खेत तैयार कर) अथवा सीड ड्रिल (सूखी बुवाई) से कर सकते हैं।
- स्त्री पद्धति से 1 हे. धान की रोपाई हेतु मात्र 1000 वर्ग फुट क्षेत्रफल की पौध पर्याप्त है तथा नर्सरी की क्यारियों 4-5 इंच ऊँची हों। स्त्री पद्धति के लिये 6 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से बीज की नर्सरी में बुआई करें। स्त्री पद्धति की नर्सरी में जहाँ तक संभव हो देशी खाद का ही प्रयोग करें तथा 8-12 दिन वाली पौध की रोपाई करें।
- अचानक बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों के लिए धान की किस्मों यथा आई.आर. 64-सब 1, स्वर्णा सब-1, जल लहरी, जलप्रिया एवं सौभा महसूरी-सब 1 (पकने की अवधि 145 दिन) के बीज का प्रयोग करें।
- धान के खेतों में रोपाई से पूर्व मिट्टी पलटने वाले हल से 1 से 2 बार जुताई अवश्य कर लें जिससे वर्षा के जल का संचय हो साथ ही खरपतवार भी नष्ट हो जाय।
- मई माह में अंत में डाली गई नर्सरी की पौध रोपाई से पूर्व धान की जड़ों को ट्राइकोडर्मा से शोधित कर रोपाई करें।
- रोपाई वाले खेत में 1 फीट ऊँची मेढ़ बनाएं ताकि वर्षा जल संचित कर लाभ लिया जा सके।
- सरकार की प्राथमिकताओं के दृष्टिगत "श्री अन्न" जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, सावा, कोदों आदि की खेती को महत्ता दी जाय। इन फसलों की खेती से मौसम के कुप्रभाव से भी बचाव किया जा सकता है।
- मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी, कोदों आदि की बुवाई का उचित समय है। बुवाई के पूर्व बीज शोधन हेतु बायोफार्मुलेशन ट्राइकोडर्मा 4 से 6 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करें।
- खरीफ फसलों की बुवाई से पूर्व कृषक जैविक व हरी खादों के साथ संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें।
- धान के अतिरिक्त अन्य खरीफ की फसलों में जल निकासी का विशेष प्रबंध करें।
- जिन कृषकों ने हरी खाद के लिए सनई व ढैंचे की बुआई की है वह 40 से 42 दिन की पौध की पलटाई रोपाई के एक सप्ताह पूर्व कर दें।
- अरहर का अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु मेड़ों पर बुवाई करें।
- पशुबाड़े में बाह्य परजीवी की रोकथाम हेतु चूने का छिड़काव करें।
- आकाशीय बिजली से बचाव हेतु पशुओं को खुले में न बांधे और नही पशुओं को बाहर चरने के लिये ले जाय।
- किसान भाई सचेत ऐप को डाउनलोड करें और एक-दूसरे किसान भाईयों को भी प्रेरित करें इस ऐप के माध्यम से रियल टाइम मौसम की जानकारी ली जा सकती है। बाढ़, भूस्खलन, चक्रवात, सुनामी, जंगलों की आग, हिम-स्खलन, आंधी, तुफान या फिर बिजली गिरने जैसी आपदाएं हो, सचेत ऐप आपको हर प्रकार से सूचना उपलब्ध कराने और सुरक्षित रखने का प्रयास करता है।

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.cdottindia.capsachet&pli=1>

### धान की खेती

- धान की कम अवधि (110 से 125 दिन) की उन्नत किस्मों सी.ओ.-51, नरेन्द्र-80, आई.आर.-50, नरेन्द्र-97, पंत धान-12, बारानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमती, मालवीय धान-2, मालवीय धान-917, शियाट्स धान-5 की नर्सरी डालें अथवा सीधी बुवाई करें।
- धान की 20-25 दिन वाली पौध की रोपाई प्रत्येक वर्गमीटर में 40-50 हिल तथा 2-3 पौधा प्रति हिल 3-4 सेमी. की गहराई तक करें।
- नर्सरी में जिंक की कमी के कारण होने वाले खैरा रोग जिसमें पत्तियां पीली पड़ जाती है एवं बाद में कथई रंग के धब्बे पड़ जाते हैं, लक्षण दिखाई देने पर इसके नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी के घोल के साथ छिड़काव करें।

- नर्सरी में लौह तत्व की कमी के कारण होने वाले सफेदा रोग, जिसमें पत्तियां कागज के समान सफेद रंग की निकलती हैं, के नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी घोल के साथ छिड़काव करें।
- रोपाई के उपरान्त संकरी व चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 3-4 लीटर अथवा प्रेटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 1.60 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से लगभग 500 ली. पानी में घोलकर फ्लैटफैन नॉजिल से 2 इंच भरे पानी में रोपाई के 1-2 दिन के अन्दर छिड़काव करें।

### अरहर की खेती

- अरहर की ढेर से पकने वाली उन्नतशील किस्मों यथा नरेन्द्र अरहर 2, मालवीय चमत्कार, राजेन्द्र अरहर-2, मालवीय विकास, पूसा 9, आजाद, नरेन्द्र अरहर 1, अमर, बहार, आई.पी.ए.-206, पूसा अरहर 151 तथा आई.पी.ए.-15-2 की बुवाई मेढों पर करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम या एक ग्राम कार्बोन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा + 1 ग्राम कार्बाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

### श्री अन्न की खेती

- ज्वार की संस्तुत संकुल प्रजातियों यथा वर्षा, सी.एस.वी.-13, सी.एस.वी.-15, एस.पी.बी.-1388 (बुन्देला), विजेता तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.-16, सी.एस.एच.-9, सी.एस.एच.-14, सी.एस.एच.-18, सी.एस.एच.-13 व सी.एस.एच.-23 के बीज की व्यवस्था करें ताकि जून के अंतिम सप्ताह में बुवाई की जा सकें।
- सावां की प्रजाति टी-46, आई.पी.-149, यू.पी.टी.-8, आई.पी.एम.-97, आई.पी.एम.-100, डी.एच.बी.एम.-93-3, डी.एच.बी.एम.-33-3 की बुवाई करें।
- कोदों की प्रजाति जे.के.-6, जे.के.-62, जे.के.-2, ए.पी.के.-1, जे.पी.वी.के.-3 की बुवाई करें।
- बाजरा, ज्वार व कोदों में बीज जनित रोग अरगट की रोकथाम हेतु बीज को बोने से पहले 0.2 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोकर तुरंत अरगट से ग्रसित बीजों को अलग कर दें तथा शुद्ध पानी से 4 से 5 बार धोकर बीज का प्रयोग करें।

### मक्का की खेती

- मक्का की शीघ्र पकने वाली संकर किस्मों जे.एच-3459, प्रकाश, पूसा संकर मक्का-5, विवेक संकर मक्का-27, एम.एम.एच.-113, एक्स-1123 जी (3342) तथा संकुल किस्मों आजाद उत्तम, प्रगति, गौरव, कंचन, सूर्या तथा शियाट्स मक्का-2 की बुवाई जून के अंत तक समाप्त करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बोने से पूर्व 1 किग्रा0 बीज को 4-6 ग्रा0 ट्राइकोडर्मा प्रति किग्रा0 बीज अथवा 2.5 ग्रा. थीरम या 1 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करें।

### सोयाबीन की खेती

- सोयाबीन की सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत उन्नत किस्मों यथा पी.के. 472, पी.एस. 564, पी.के. 416, पी.एस. 1024, पूसा-16, पी.एस.1042, जे.एस. 20-34, जे.एस. 20-98, पंत सोयाबीन-26, जवाहर सोयाबीन 20-116, बुंदेलखण्ड हेतु संस्तुत जी.एस.-2, जे.एस.-93-5, जे.एस.-72-44, जे.एस.-75-46, पूसा-20, जे.एस.-335, एम.ए.यू.एस.-47, एन.आर.सी.-37 तथा तराई एवं भाभर क्षेत्र हेतु संस्तुत पी.के.-262 की बुवाई उचित नमी तथा उचित तापमान पर करें।

### मूँगफली की खेती

- मूँगफली की कम अवधि वाली प्रजातियों चन्द्रा उपरहार, उत्कर्ष, एम-13, अम्बर, चित्रा (एम.ए.10), कौशल (जी.201), टी.जी. 37ए, प्रकाश (CSMC-884) की बुवाई करें।
- मूँगफली की उन्नत व अधिक उपज वाली प्रजातियों यथा चित्रा, चन्द्रा, कौशल, प्रकाश, अम्बर, टी.जी.-37 ए, उत्कर्ष एवं दिव्या की बुवाई करें।

### तिल की खेती

- तिल की उन्नत किस्मों यथा गुजरात तिल-6, आर.टी.-346, आर.टी.-351, तरुण, प्रगति, शेखर, टा-78, टा-13, टा-12 तथा टा-4 बुवाई करें।

## गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ने की बुवाई हेतु जिन किसानों ने खेत खाली छोड़ रखा है उसमें ढ़ैचा की बुवाई करके 50 से 55 दिनों में पलट दें।
- गन्ने को गिरने को बचाने एवं अवांछित कल्लों को निकलने से रोकने हेतु गन्ने की जड़ों पर यदि अभी तक मिट्टी नहीं चढ़ाई है तो अनुकूल मौसम होने पर मिट्टी चढ़ा दें।
- बसंतकालीन गन्ने में तीव्र वृद्धि हेतु नैनो यूरिया 2.5 मि.ली. एवं नैनो डी.ए.पी. 2.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से खेत में नमी की दशा में गन्ने की पत्तियों पर छिड़काव करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा थायोफिनेट मिथाइल 0.2 प्रतिशत की ड़ेचिंग करें।
- गन्ना फसल हेतु अधिक हानिकारक चोटीबेधक कीट की तृतीय पीढ़ी से बचाव हेतु यदि अभी तक उपचार नहीं किया है तो क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.7 एस.सी. की 375 मि.ली. मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से गन्ने की लाईनों के पास ड़ेचिंग करें।
- चोटीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु ग्रसित नवजात पौधे को जमीन की सतह से काटकर नष्ट कर दें अत्यधिक प्रकोप की दशा में क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. के 150 मि.ली. कीटनाशक को 400 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से ड़ेचिंग कर सिंचाई करें।
- गन्ने में पाइरीला कीट का प्रकोप देखा जा रहा है इसके नियंत्रण हेतु यदि खेत में परजीवी प्राकृतिक रूप से दिख रहे हैं तो खेत में नमी बनाये रखे तथा कीटनाशक का छिड़काव न करें।
- गन्ने में माइट कीट का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत+साइपर 4 प्रतिशत की 750 मि.ली. कीटनाशक को 625 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- पेड़ी फसल में अधिक पैदावार लेने हेतु उर्वरक एन.पी.के. 19:19:19 की 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से पत्तियों पर छिड़काव करें।

## सब्जियों की खेती

- फूलगोभी की अगेती किस्में अर्ली कुवारी, पूसा अर्ली सेंथेटिक, पंत गोभी-3, पूसा दीपाली आदि किस्मों का 500-600 ग्राम बीज प्रति हे० की दर से नर्सरी तैयार कर लें।
- भिण्डी की खरीफ (वर्षा ऋतु में) के मौसम में बुआई के लिए 10 जुलाई तक का समय उपयुक्त माना जाता है। इसकी बीज दर 10-12 किग्रा. प्रति हे० तथा संकर किस्मों के लिए 5-8 किग्रा. बीज पर्याप्त है।
- खरीफ प्याज की नर्सरी तैयार करने के लिए पौधशाला में खरीफ प्याज की बुआई करें। एक हे० प्याज फसल के लिए 8-10 किग्रा. बीज पर्याप्त होता है।
- खरीफ ऋतु की अगेती सब्जियों के बीज को ट्राईकोडर्मा पाउडर 5-6 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें।
- लोबिया की खेती के लिए 15-20 किग्रा. बीज प्रति हे० की दर पर्याप्त होती है। बुआई करने से पहले बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचार करके बुआई करना चाहिए।
- बैंगन एवं टमाटर की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली० मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- पौधशाला हेतु ऊंचे एवं ढालू स्थान का चयन करें, जिससे वर्षा के पानी का निकास आसानी से हो सके। नर्सरी डालने के लिए 7.5 मीटर लम्बा 1 मीटर चौड़ा और 10-15 से.मी. ऊंचा स्थान बनाना चाहिए।

## बागवानी

- आम एवं अमरुद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8-10 ट्रैप प्रति हे० में 6 से 8 फिट की उचाई पर टहनियों में बांध कर लटकाए तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा 20-25 दिन के अन्तराल पर ल्योर को बदलते रहना चाहिए।
- आम में परिपक्वता आने पर प्रातः अथवा सायंकाल फलों की 8-10 मि.मी. डंठल सहित तुड़ाई की जानी चाहिए।

- आम को एक सार पकाने के लिए 750 पी.पी.एम. इथरेल (1.8 मि.ली./लीटर) गुनगुने पानी (52±20 से.) के घोल में 5 मिनट तक डुबोकर तदोपरान्त छांव में सुखाने के बाद भण्डारण करना चाहिए। इसी में (0.5 ग्रा./लीटर) कार्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल मिलाने से अन्य फफूंदी भी नष्ट हो जाती है और आम अच्छा पकता है।
- केले के नवीन बाग लगाने हेतु ऊतक संवर्धित रोगरोधी जी-9 प्रजाति लगाये। केले के पुराने बागों में पौधों में सहारा लगायें।

#### पशुपालन

- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत गलाघोंटू बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें, उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें।
- बदलते मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संक्रमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- वर्तमान समय में खरीफ चारा फसलों की बुवाई प्रारंभ हो गई है। सभी कृषक/पशुपालक खरीफ चारा फसलों यथा ज्वार, बाजरा, लोबिया, मक्का आदि की बुवाई समय से करें।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं०-1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

#### मत्स्य पालन

- भारतीय/विदेशी कार्प मछलियों का प्रजनन प्रारम्भ कर दें।
- ग्री आउट तालाब में फिंगरलिंग मत्स्य बीज संचयन 2000-4000 प्रति एकड़ की दर से शुरू कर दें।
- मत्स्य बीज परिवहन दिन के कम तापमान वाले समय में करें।
- मौसम खराब रहने यानि अत्यधिक गर्मी, आद्रता, वर्षा रहने पर भोजन का प्रयोग आधा कर दें।
- जुलाई माह में वर्षा का मौसम एवं आद्रता अधिक होने के कारण तालाब के पानी में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा काफी कम हो जाने की संभावना बनी रहती है, जिससे मछली तालाब के ऊपरी सतह पर आकर मरने लगती है। इसके बचाव के लिए शाम एवं सुबह 4-4 घंटा एयरटेर या पंप से पानी को चलाएँ अथवा ऑक्सीजन बढ़ाने वाली दवा यथा आटूमैक्स या एडऑक्सी या ऑक्सीग्री का प्रयोग 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से सुखा छिड़काव करें।
- ब्रूडर तालाब में पूरक आहार का प्रयोग मछली के कुल शरीर भार का 2 से 3 प्रतिशत की दर से करें।
- मत्स्य बीज उत्पादक अपने हैचरी से रोडू, कतला, मृगल, ग्रास कार्प, कॉमन कार्प एवं सिल्वर कार्प को स्पॉन का उत्पादन गहन प्रबंधन से करना चालू रखें।
- नर्सरी तालाब में स्पॉन डालने के 15 दिनों के बाद ही रासायनिक उर्वरक का प्रयोग करें।
- मत्स्य पालक किसान बन्धु अपने तालाब में फिंगरलिंग 6,000-8,000 प्रति एकड़ या ईयरलिंग 2,000-4,000 प्रति एकड़ की दर से अपने तालाब में डालकर पालन सुनिश्चित करें।
- तालाब में चूने का प्रयोग 15 दिनों के अन्तराल पर पी.एच. मान के अनुसार 10-15 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से करें।
- माह में एक बार जैविक खाद के रूप में गोबर 400 कि.ग्रा. प्रति एकड़ या सरसों/राई की खली 100 कि.ग्रा./एकड़ एवं सिंगल सुपर फॉस्फेट 15-20 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें। रासायनिक एवं जैविक उर्वरक के बीच का अन्तराल कम से कम 15 दिन होना चाहिए।
- संचयन 2000-4000 प्रति एकड़ की दर से जून के अंतिम सप्ताह में शुरू कर दें।

#### वानिकी

- गड़ढा भरान यथाशीघ्र पूर्ण कर लें। वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य प्रारंभ करें।

- पौधों के रोपण अथवा बिक्री हेतु ले जाने से पूर्व तक पौधों को खुले क्षेत्र में रखें।

#### राज्य आपदा प्रबंधन

- वर्तमान मौसम में सर्पदंश की घटनाएँ होती हैं अतः सर्पदंश के उपरांत रक्त प्रवाह को बांधने का प्रयास न करें। घाव को पानी से धोएं और साफ कपड़े से ढक दें। प्रभावित अंग स्थिर रखने हेतु किसी सीधी स्केल या फन्टी व बैंडेज की सहायता से बांधें। जल्द से जल्द किसी नजदीक स्वास्थ्य केन्द्र में सम्पर्क करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनांक 04 जुलाई, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।  
नोट:-

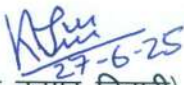
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाइट [upcar.up.gov.in](http://upcar.up.gov.in) पर भी उपलब्ध हैं। क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट [www.kisanmitraup.ai](http://www.kisanmitraup.ai) पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल [upcar12@gmail.com](mailto:upcar12@gmail.com) पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(राजर्षि कुमार शर्मा)  
प्रभारी महानिदेशक

#### प्रतिलिपि: उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिमिंगनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेंगे।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।

21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/बोंदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बोंदा/सै. हिगिगनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिंग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

  
 (विनोद कुमार तिवारी)

प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राफ वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025-26 की आठवीं बैठक  
दिनांक 26 जून, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. डा. परमेन्द्र सिंह, उपमहानिदेशक (कृ.शि.त.ह.), उपकार, लखनऊ।
3. डा. राजर्षि कुमार गौर, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी), उपकार, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी कृषि मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ (ऑनलाइन)।
5. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
6. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
7. डा. सुनील कुमार राय, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र एवं पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
8. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
9. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राफ रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
10. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
11. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
12. डा. सोमवीर सिंह, सह प्राध्यापक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
13. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
14. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।
15. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राफ वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
16. डा. नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान विभाग, लखनऊ।
17. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
18. श्री अजय कुमार मिश्रा, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
19. श्री प्रतीक कुमार, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, शुआट्स, प्रयागराज।
20. डा. प्रिया रंजन कुमार, सह प्राध्यापक (पशु चिकित्सा स्त्री रोग), बी.एच.यू. वाराणसी (ऑनलाइन)।
21. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्य, एग्रोमेट आवश्यकवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
22. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
23. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ (ऑनलाइन)।
24. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ (ऑनलाइन)।
25. डा. आशाराम सिरवी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएफआरआई, झांसी (ऑनलाइन)।